...ollege, Jehanabad
B.A. I Subject - Psychology (Subsidiary)
Teacher - A.K. Sinha
Topic - James-Lange Theory of Emotion. पृष्ठ - 1

प्राय प्रत्येक मानव प्राणी को संवेगात्मक परिस्थितियों का सामना करना पड़ता है तथा उससे संबंधित संवेग की अनुभूति भी होती है। परन्तु संवेग कैसे उत्पन्न होता है? संवेग में मस्तिष्क तथा अन्य तंत्रों की भूमिका क्या है? इस सम्बन्ध में मनोवैज्ञानिकों में अभी तक एकमत नहीं हो पाया है। परिणाम स्वरूप विभिन्न मनोवैज्ञानिकों द्वारा संवेग से संबन्धित अनेक सिद्धान्तों का प्रतिपादन किया गया है। James-Lange सिद्धान्त भी उनमें से एक है। जेम्स-लांजे सिद्धान्त का उल्लेख करने के पूर्व संवेग के सम्बन्ध में सामान्य विचारधारा पर प्रकाश डालना आवश्यक प्रतीत होता है।

संवेग के सम्बन्ध में सामान्य विचारधारा के अनुसार सबसे पहले संवेग उत्पन्न करने वाला उद्दीपन उपस्थित होता है। उसके बाद व्यक्ति उसका प्रत्यक्षीकरण करता है और तब उसे संवेग की अनुभूति होती है और अन्ततः अनुभूति के उपरान्त व्यक्ति में उससे सम्बन्धित आन्तरिक तथा वाह्य व्यवहार होता है।

संवेग से सम्बन्धित उपर्युक्त विचारधारा के विपरीत James ने एक नया सिद्धान्त का प्रतिपादन किया। James मूलतः एक अमेरिकन प्रसिद्ध दर्शनशास्त्री थे। लेकिन संवेग के क्षेत्र में उनके द्वारा प्रतिपादित सिद्धान्त ने मनोविज्ञान जगत में हलचल उत्पन्न कर दिया और संवेग के सम्बन्ध में अनेक प्रयोगात्मक अध्ययनों के आधार पर विभिन्न मनोवैज्ञानिकों द्वारा अलग-अलग सिद्धान्त प्रतिपादित किया गया।

James ने सामान्य विचारधारा को पूर्णतः खारिज करते हुए दावा किया कि

"My Theory, on the contrary, is that the bodily changes follow directly the perception of exciting fact, and our awareness of the same changes as they occur, is emotion."

शेष पृष्ठ - 2

James द्वारा दी गई उपर्युक्त कथन से स्पष्ट होता है कि संवेगात्मक उद्दीपन के उपस्थिति के साथ ही व्यक्ति में पहले शारीरिक (आन्तरिक) परिवर्तन होता है जिसके वजह से संवेग की अनुभूति बाद में होती है। यानि शारीरिक परिवर्तनों का ज्ञान ही संवेग है। James के अनुसार संवेग की अनुभूति होने के पूर्व प्राणी के संवेगात्मक उद्दीपन उपस्थित होने पर उसको सरल ज्ञान होता है जो असंवेगात्मक होता है। इसके बाद मांस-आदि के अवयवों में दौड़ पड़ते हैं तदनुकूल शारीरिक परिवर्तन होने लगता है इसके पश्चात संवेग की अनुभूति होती है।

James ने संवेगात्मक अनुभूति के सम्बन्ध में अपनी पुस्तक Principles of Psychology VOL-II 1890 में स्पष्ट रूप से लिखा है कि:—

"We angry because we strike, sorry because we cry, and afraid because we tremble, and not that we strike, cry or tremble because we are angry, sorry, or fightful, as the case may be".

इस प्रकार James अपने उपर्युक्त कथन के आधार पर यह दावा करते हैं कि संवेगात्मक व्यवहार से ही संवेगात्मक अनुभव का जन्म होता है और सदियों पुराने विश्वास को ध्वस्त किया कि संवेगात्मक अनुभव से संवेगात्मक व्यवहार होता है। James ने स्वयं ही एक बार वर्तन में रखे खून को एक लकड़ी से हिला रहे थे और वे बेहोश हो गये, उन्हें यह पता नहीं था कि खून देखने से आदमी बेहोश भी हो जाता है। इससे यह सिद्ध हुआ कि जिस प्रकार आग से उंगली सटते ही खींच ली जाती है और

शेष पृष्ठ- 3 पर

संवेग का अनुभव बाद में होता है उसी प्रकार संवेगात्मक उद्दीपन का सामना होते ही संवेगात्मक व्यवहार होने लगता है और संवेगात्मक अनुभव बाद में। इस प्रकार James का विश्वास है कि यदि शारीरिक परिवर्तन रोक दिये जायें तो संवेग की अनुभूति नहीं होगी।

James के समय में ही Carl Lange, जो कि डेनमार्क का मनोवैज्ञानिक था, ने भी संवेग पर अपना अध्ययन जारी रखा और वे भी संवेग के सम्बन्ध में James से मिलते-जुलते विचार प्रकट किये। दोनों में मुख्य अन्तर केवल इतना ही है कि James ने संवेग की अवस्था में उत्तेजक का स्थान अन्तरावयव एवं ग्रन्थियों को माना है जबकि Lange ने वाहिका गति तंत्र (Vasomotor Mechanisms) की क्रिया को। इसलिए दोनों मनोवैज्ञानिकों के विचारों को एक ही सिद्धान्त के अन्तर्गत रखा गया जिसे संवेग से सम्बन्धित James-Lange सिद्धान्त के नाम से जाना जाता है।

James-Lange के द्वारा प्रतिपादित संवेग से सम्बन्धित सिद्धान्त का शारीरिक आधार यह है कि ज्योंही कोई संवेगात्मक उत्तेजना उपस्थित होता है वैसे ही तुरंत ज्ञानेन्द्रियाँ उत्तेजित हो जाती हैं परिणाम स्वरूप ज्ञानवाही स्नायु-प्रवाह मस्तिष्कीय वल्क (Cortex) में जाते हैं जहाँ पर उत्तेजना का प्रत्यक्षीकरण होता है और साथ ही साथ गतिवाही स्नायु अन्तरावयवों,

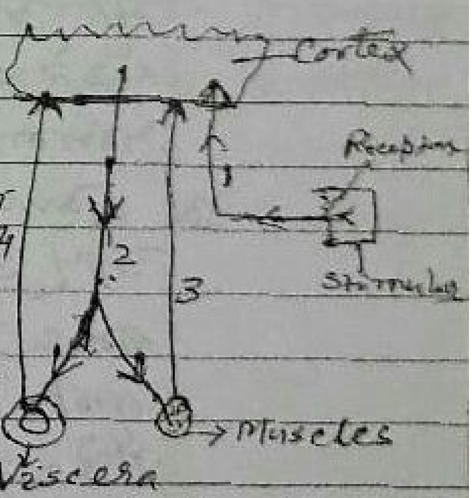

मांसपेशियों तथा ग्रन्थियों में पहुँचते हैं और उनकी क्रिया में परिवर्तन लाते हैं। इस घटना को सामने के रेखा चित्र में देखा जा सकता है। इन क्रियाओं के परिणाम स्वरूप प्राणी संवेगात्मक व्यवहार करता है इसके बाद मांसपेशियों, ग्रन्थियों तथा अन्तरावयवों स्थित ज्ञानेन्द्रियों ज्ञानवाही प्रवाह निकल कर पुनः मस्तिष्कीय वल्क में पहुँचते हैं परिणाम स्वरूप व्यक्ति को उस उद्दीपन से सम्बन्धित संवेग की अनुभूति होती है।

शेष पृष्ठ-4 पर

James-Lange द्वारा प्रतिपादित संवेग के लोकप्रिय सिद्धांत की पुष्टि Ax-1953, Funkenstein 1955, तथा Elmadjian-1959 के प्रयोगात्मक अध्ययनों के परिणामों से भी होती है।

James-Lange का सिद्धांत अपने आप को दोषों से मुक्त रख पाने में असफल रहा। इस सिद्धांत के निम्नलिखित आलोचनाएँ हुई।

1. Wilhelm Wundt ने James-Lange के सिद्धांत की आलोचना करते हुए यह तर्क दिया कि अनेक परिस्थितियों में संवेगात्मक अनुभवों को रोक देने से भी संवेगात्मक व्यवहार रुक जाते हैं। अतः संवेगात्मक व्यवहार संवेगात्मक अनुभूति का कारण नहीं हो सकता है।

2. कभी-2 संवेगात्मक व्यवहार के बिना भी संवेग की अनुभूति होती है। जैसे मातापिता द्वारा बच्चे को डांटना या अधिकारी को अपने अधीनस्थ कर्मियों को डाँटते समय क्रोध की अनुभूति होती है परन्तु उसकी अभिव्यक्ति व्यवहार के रूप में नहीं होती है।

3. James-Lange के अनुसार संवेगात्मक परिस्थिति और संवेगात्मक व्यवहार के बीच सहज क्रिया की सम्बन्ध पाया जाता है लेकिन Worcestor के अनुसार सभी परिस्थितियों में ऐसी बात नहीं पाई जाती है। जैसे- जंगल में किसी नरभक्षी पशु को देखकर व्यक्ति डर जाता है परन्तु उसी नरभक्षी पशु को जब सर्कस या चिड़ियाघरों में देखकर भय का संवेग उत्पन्न नहीं होता है।

4. Dr. Strumpell ने अपने अध्ययन में पाया कि जब एक बच्चे का संपूर्ण शरीर संवेदनशून्य हो जाने पर भी उसे गन्दे बेड पर मल-मूत्र होने पर उसमें लज्जा या शर्म का संवेगात्मक अनुभव होता था।

शेष पृष्ठ -5 पर

Dr. Dana ने एक महिला का उदाहरण दिया है जिसके गर्दन के पास सुषुम्ना (Spinal cord) घोड़े से गिर जाने से टूट गया था फिर भी उसे सभी प्रकार के संवेगात्मक अनुभूति होती थी। उपर्युक्त अध्ययनों के साक्ष्यों से भी James-Lange का सिद्धान्त खण्डित होता है।

5. संवेग से सम्बन्धित James-Lange का सिद्धान्त शेरिंगटन, कैनन, मैरेनन, लिंडस्ले, लैशले तथा ब्रिज आदि मनोवैज्ञानिकों के द्वारा किये गये प्रयोग परिणामों के आधार पर भी खण्डित किया जाता है।

6. James-Lange के द्वारा प्रतिपादित संवेग से सम्बन्धित सिद्धान्त की आलोचना शरीरशास्त्रियों द्वारा भी की गई है। शरीरशास्त्रियों का मानना है कि आन्तरांग अपेक्षाकृत असंवेदनशील एवं धीमी गति से प्रतिक्रिया करती है, संवेगात्मक अनुभव संवेगात्मक परिस्थिति के प्रत्यक्षीकरण के तुरंत बाद ही हो सकती है जबकि आन्तरांगों को सक्रिय करने में कुछ अधिक ही समय लगता है। अतः संवेगात्मक अनुभूति संवेगात्मक व्यवहार के पहले ही हो जाती है न कि संवेगात्मक व्यवहार के बाद।